उपसंहार

उपसंहार

रायगढ़ रियासत के नरेश चक्रधर सिंह का प्रशासन, साहित्य एवं कला में योगदान के अर्न्तगत हम इसे विभिन्न अध्यायों में बांट कर इसके विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया है। इसमें हम तात्कालिन रायगढ़ के भौगोलिक एवं सांस्कृतिक, रायगढ़ रियासत के स्थापना से लेकर इसके विकास (राजा चक्रधर सिंह के विशेष संदर्भ में) तक, राजा चक्रधर सिंह का प्रशासन, साहित्य, एवं संगीत में उनके द्वारा किया गया अभूतपूर्व योगदान एवं रायगढ़ के गणेश मेला(चक्रधर समारोह) के शुरूवात से लेकर वर्तमान स्थिति तक, विभिन्न आयामों का विस्तृत विवेचना किया गया है।

वर्तमान रायगढ़ जिला सन् 1947 के पूर्व छत्तीसगढ़ की चौदह रियासतों में एक था। रियासत की कुल क्षेत्रफल 1486 वर्गमील था, इसकी लंबाई 56 मील एवं चौड़ाई 38 मील थी। इसके दक्षिण में सारंगढ़, उत्तर में उदयपुर और जशपुर, पूर्व में गंगपुर और पश्चिम में सक्ति रियासतें थी। रायगढ़ रियासत तब घनें जंगलो से आच्छादित था। इसका 75 प्रतिशत भाग ऊंचे–ऊंचे पहाड़ और घने जंगलो से घिरा था। उत्तर में सिध्वि चौरा,मार,चांवर ढाल, माती की पहाड़ियाँ। मध्य भाग, खाड़ाधार, करमागढ़, बेनीपाट, सिंघनपुर, कबरा एवं बोतल्द, उत्तर पश्चिम की सीमा में बरगढ़ की पहाड़ियाँ, दक्षिण भाग की पहाड़ियाँ में सोनाखान की पहाड़ियाँ से पश्चिम की ओर फेली हुई थी। जो इस बात के साक्ष्य है कि रायगढ़ रियासत का अधिकांश भाग घने वनों से आच्छादित था, केवल मध्य भाग ही यहाँ का सममतल है। धान की

अच्छी फसल होती है, यहाँ औसतम वर्षा तब 50 से 60 इंच तक होती थी, रबी और खरीब दोनों ही फसलें भरपूर मात्रा में उगायी जाती थी। वनोपज आदिवासियों के भरण पोषण के साधन थे। चार, तेंदु महुआ के पेड़ जो इन्हें भोजन देते थे बेहरमी से काटे जा रहे है।

रायगढ़ का नाम राई तथा गढ़ दो शब्दों से बना है। राई एक कंटीला वृक्ष होता है, जो यहां बहुतायत से पाया जाता है। एक अन्य मत के अनुसार राई वास्तव में जामुन के वृक्ष का ही नाम है, वास्तव में यहां रायजाम या चिराईजाम के घने जंगल आज भी पाए जाते हैं, खरसिया के नगर सेठ रायजाम देश के कोने कोने में भेजकर सालाना करोड़ो रूपये कमा लेते है। स्पष्ट है कि रायगढ़ का नामकरण वनस्पति विशेष से ही हुआ है, गढ़ का अर्थ किला होता है, यह सभी को ज्ञात है एक अन्य मत के अनुसार रायगढ़ का अर्थ राय अर्थात श्रेष्ठ किया है। रायगढ़ रियासत का क्षेत्र लैलूंगा के पठार (उत्तरी भाग), चांवर ढाल की पहाड़ियां (मध्य भाग), महानदी की घाटी और (दक्षिणी भाग) सारंगढ़ की पहाड़ियों से घिरा हुआ था। यहां की प्रमुख नदियां मांड, कुरकुट और केलो हैं जो कि महानदी की सहायक नदियां है जो गर्मी के दिनों में प्रायः क्षीण धारा से प्रवाहित होती है। रायगढ़ रियासत में लैलूंगा, घरघोड़ा, तारापुर, तमनार आदि जमींदारियां थीं। इसी प्रकार तमनार, टेरम, बरगढ़ आदि इसके शक्तिशाली परगने थे। जैसा कि पूर्व में कहा गया है रायगढ़ रियासत खनिज संपदा और वनोपज की दृष्टि से अत्यधिक संपन्न थी। आज भी कोयले का पर्याप्त भंडार है, रियासत में ईस्ट माईनिंग सिंडीकेट को 26 वर्षो के लिए पट्टे पर दिया था। यहां

अभ्रक, लौह अयस्क, डोलोमाइट, चूना के पत्थर का भी भंडारण है जिसका दोहन ब्रिटिशकाल से वर्तमान तक किया जा रहा है रायगढ़ रियासत में कन्हार जमीन की अपेक्षा मटासी भूमि अधिक है जो धान के लिए उपयुक्त है इसी कारण इसे धनहा रियासत कहा जाता था। यहॉ उडद, मूंग ,मसूर, कुलसी की पर्याप्त पैदावार हाती थी। आज गेंहूँ, चना , सन और गन्ने की खेती होती है। जलवायु की दृष्टि से रायगढ़ का दक्षिणी भाग अस्वास्थकारक था, ज्वर से लोगों की मृत्यु अधिक होती थी। 1902 से 1906 तक हैजे के प्रकोप से हजारों की जान गई थी। अभिलेख के अनुसार यहां का दैनिक तापक्रम अधिकतम 44 डिग्री सेल्सियस तथा न्यूनतम 30 डिग्री सेल्सियस है, लेकिन अनुमान है पूर्व में यह तापक्रम कुछ कम ही रहा होगा, क्योंकि इसका अधिकांश भाग जंगलों से आच्छादित रहता था, जिससे जमीन की नमी बनी रहती थी। यह गर्व की बात है कि रियासत काल में रायगढ़ में एक मौसम प्रेक्षण शाला थी। आज उसका कहीं भी अस्तित्व नहीं है।

रायगढ़ रियासत का चहुमुखी विकास यहॉ रेल लाईन आने से ही हुआ। जैसा कि पूर्व में संकेत किया गया है यहां सड़कों का अभाव था, महानदी में नाव के द्वारा व्यापारिक सामग्री सरिया से सूरजगढ़ भेजी जाती थी। लेकिन 1890 में यहॉ लाईन बिछी। राजा भूपेदव सिंह ने बंगाल–नागपुर रेल्वे कंपनी के लिए करीब 35 मील की लंबी जगह दी। इसके बाद यहॉ देश के विभिन्न प्रांतो से व्यापारिक जातियॉ मसलन गुजराती, मारवाड़ी, पंजाबी एवं सिंधियों का आगमन हुआ और आज इन्ही का वर्चस्व है, राजपरिवार के साथ स्थानीय लोगों का कोई अस्तित्व नहीं

है। यहां के यातायात का विकास इन जातियों के आगमन के साथ हुआ इसी समय में लगभग यहॉ शिक्षा का प्रचार प्रसार हुआ। लोचन प्रसाद पांण्डे ने इसे आदि मानव सभ्यता की जन्मभूमि कहा है गजमार की पहाड़ियों और केलो–माण्ड से कुछ ऐसे जीवाश्म पाए गये है, जिससे पता चलता है कि यहॉ इसका प्रयोग आदिमानव शिकार के समय शस्त्र के रूप में करता था। रागयढ़ रियासत में सिंघनपुर की गुफा, कबरा पहाड़, बम्हनीन पहाड़ शैलाश्रयों के लिए समूचे विश्व में प्रसिद्ध है। इन शैलाश्रयों में आदि मानव रहा करते थे। 1910 में रेल्वे के एक इंजीनियर ने चंवर ढाल की पहाड़ियों पर अनेक गुफा चित्रों की खोज की थी। 1918 में इनसाइक्लोपीडिया इंडिका के 13 वें अंक में इन पर व्यापक प्रकाश डाला गया तो इसकी विश्व स्तर पर चर्चा होने लगी। रायगढ़ रियासत का कोई प्रमाणिक इतिहास नहीं मिलता है, लेकिन राजिम के एक शिलालेख में यहॉ के तीन परगनों का स्पष्ट उल्लेख हुआ है। राठा, टेरम एवं तमनार जो कि रायगढ़ नगर के चालीस किलोमीटर के भीतर अवस्थित है । प्रचीन काल में यह भू–भाग महाकौशल, दक्षिण कौशल आदि के नाम से विख्यात था और यहॉ सातवाहनों, पांडु, सोमवंशी आदि शासकों ने राज्य किया। पहला प्रमाणिक इतिहास यहॉ कलचुरी के युग का मिलता है, त्रिपुरी के कलचुरियों की शाखा ग्यारहवीं शताब्दी में तुम्माण बाद में रतनपुर राज्य स्थापित करने में सफल हुई। अनुमान है रायगढ़ रियासत भी कभी रतनपुर राज्य में शामिल थी।

नर्तन सर्वस्व की भूमिका से ज्ञात होता है यहां पूर्व में दियागढ़ , कर्मागढ़ और मीलूपारा जैसे राज्य थे जहॉ पाल कलिंगवंशी राजाओं ने

राज किया था, इन्हे ही हराकर रायगढ़ के संस्थापक राजा मदन सिंह ने अपने राज्य की सीमा का विस्तार किया था। कलचुरी के बाद संभवतः यह रियासत मुगलों, मराठों, भोसलों और अंत में अंग्रेजो के अधीन रही, इसका उल्लेख इतिहास में अनेक बाद हुआ है।

रायगढ़ रियासत का इतिहास कोई तीन सौ वर्ष से ज्यादा पुराना नहीं है, लेकिन यह वनांचल जनशून्य कभी नहीं रहा, हम पहले ही कह चुके है कि यह आदि मानव की सभ्यता की जन्मभूमि है और यहॉ की गुफाएँ तथा शैलाश्रय इस बात के साक्ष्य है कि यहॉ प्रागैतिहासिक काल में भी मानव का अस्तित्व था। रायगढ़ रियासत के पूर्व भी जैसा कि हम बता चुके हैं यहॉ राजिम के एक शिलालेख के अनुसार राठ, टेरम और तमनार तीन–तीन परगनों का उल्लेख मिलता है। रायगढ़ के पश्चिम में रतनपुर राज्य और संबलपुर राज्य के दो अतिशक्तिशाली राज्य रहे, हो सकता है राठ, टेरम और तमनार परगना पूर्व में रतनपुर राज्य में शामिल रहे हो। बाद में वे संबलपुर राज्य में शामिल हो गये, रतनपुर राजा के छत्तीसगढ़ और संबलपुर राज्य में 18 गढ़ थे।

रायगढ़ का संस्थापक राजा मदन सिंह को माना जाता है। मदन सिंह मूलतः चांदा के बैरागढ़ का राजकुमार था, वह साहसी, शूरवीर और उत्साही था, पारिवारिक मनमुटाव या कुछ नया कर दिखाने के उत्साह में सबसे पहले फुलझर आया, फुलझर रायपुर जिले के सराईपाली बसना के सीमांत पर आज भी अस्तित्वमान है, यहॉ उसका मामा जमींदार था। अपने मामा के यहां से वह पूर्वोत्तर सीमा पर आगे बढता हुआ बुनगा पहुंचा, उसने अपने बाहुबल से सैन्य संगठन कर एक छोटी सी जमींदारी

स्थापित की। वहॉ गड़ाईन रानी से विवाद उत्पन्न हो जाने पर वह फिर उत्तर पूर्व की ओर बढ़ा और गजमार की पहाड़ी की ढाल पर केलो तट पर उसने मुर्गापाट की स्थापना कर नवागढ़ी का निर्माण किया। चूंकि दियागढ़ और कर्मागढ़ के गढ़ाधिपति आपस में लडते रहते थे, कुशासन को देखते हुए मदन सिंह ने रायगढ़ रियासत की मजबूत शिला रखी। मदन सिंह के बाद तखत सिंह तथा उसके बाद बेटसिंह शासक हुए। तीनों शासकों को गढपति या जमींदारी कहा जा सकता है। रायगढ़ रियासत का प्रमाणिक इतिहास सन् 1602 से शुरू होता है उस समय मेजर इम्फे डिप्टी कमिश्नर संबलपुर के अनुसार तख्त सिंह जमींदार की हैसियत से पचास वर्षो तक शासक रहा। पहली बार बेट सिंह के पुत्र द्वीप सिंह या दिरिप सिंह को संबलपुर के महाराज अजीत सिंह ने राजा बनाया था। इससे संकेत मिलता है कि रायगढ़ जमींदारी पूर्व में रतनपुर राज्य का हिस्सा न होकर संबलपुर राज्य के अंतर्गत थी। इसका एक और ठोस प्रमाण यह है कि शक्ति जमींदारी हरीसिंह नाम के गोंड युवक को उसके बहादुरी के लिए संबलपुर के शासक द्वारा ही प्रदान की गई थी। और बाद में जब संबलपुर 18 गढ़जात के शक्तिशाली राज्य के रूप में उभरा तब सक्ति, सारंगढ़ और रायगढ़ उसके गढ़जातो में थे। दरअसल यहॉ का पहला राजा द्वीप सिंह हुआ, उसने अजीत सिंह के पुत्र उभय सिंह जो चांदा में मराठो के कैद में था, छुड़ाने में मदद की थी इसलिए वह राजा के रूप में पहली बार 1912 में विभूषित हुआ। इसके बाद यहॉ क्रमशः जुझार सिंह और देवनाथ सिंह के समय तिलक संबलपुर से आया था। रायगढ़ पूर्व में स्वतंत्र था लेकिन महाराजा पटना

के शक्ति–समर्थन से इसे अपने राज्य में मिला लिया, लेकिन संबलपुर के शासक ने पटना पर दबाव डालकर इसे अपने 18 गढ़जातो में मिला लिया। जुझार सिंह जुझारू स्वभाव का निर्भिक योद्धा था। संबलपुर क्षेत्र में उसका भारी दबदबा था। सन् 1800 में जब संबलपुर मराठों के हाथ में आया तो इस दूरदर्शी राजा ने 1802, 1804, 1806 के कागजात के द्वारा अंग्रेजो को संरक्षक बना लिया और भोसले उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सका। 25 मई 1819 को जुझार सिंह ने 30 स्वर्ण मुद्राएँ टकोली के रूप में स्वीकार कर अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी से अपना मजबूत संबंध बना लिया, राजा जुझार सिंह की तारीफ मेजर ब्राउटन तक ने की की। जुझार सिंह का पुत्र देवनाथ सिंह अपने पिता से भी ज्यादा ताकतवर, वीर सूरमा और दूरदर्शी था, उसने 1857 के विद्रोह को कुचलने में अंग्रेजो की भारी मदद की, बरगढ़ के अजीत सिंह और उदयपुर तथा जशपुर के कुमारों को उसने छल–बल से पकड़वाकर, अंग्रेजो की मदद की, बदले में अंग्रेजो ने देवनाथसिंह को बरगढ़ का परगना देकर पुरस्कृत किया। इतना ही नहीं उसने संबलपुर के सुरेन्द्र साय तक को पुरानी मित्रता भुलाकर क्षति पहुंचाई और वह अंग्रेजो का भारी कृपा–पात्र बन गया। छत्तीसगढ़ संभाग के तत्कालीन आयुक्त फोर्ड ने इसकी बड़ी तारीफ करते हुए उसे साउथ–वेस्ट फ्रंटियर एजेंसी के अंतर्गत आने वाले शासकों में सबसे अधिक निष्ठावान और उत्तम व्यवहार वाला कहा है। देवनाथ सिंह के बाद 1867 में घनश्याम सिंह सामंत शासक के रूप में गद्दी में बैठा। किंतु अयोग्य होने और खर्चीला स्वभाव होने के कारण ब्रिटिश शासन ने सन् 1885 में उसके अधिकार

छीन लिए। इसके बाद सबसे ज्यादा प्रजावत्सल और कुशल प्रशासक के रूप में राजा भूपदेव सिंह का नाम आता है, राजा भूपदेव सिंह 1890 में गद्दी में बैठे। उन्हे 1894 में सामंत शासक के पूर्ण अधिकार मिले। यह रायगढ़ रियासत का पहला शासक था जिसने अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त की थी। उसने प्रशासन के समस्त विभागो पर रूचि लेते हुए तंत्र को मजबूत बनाया, उसने प्रजाहित में अनेक काम किये, शिक्षा स्वास्थ्य और यातायात पर उसने विशेष ध्यान दिया। यह संयोग ही था कि राजा भूपदेव सिंह के समय 1890 में रेल लाईन बिछी राजा साहब ने 35 मील लंबी जगह बंगाल–नागपुर रेल्वे कंपनी को दी। रेल लाईन बिछते ही रायगढ़ सभी दृष्टि से विकसित होने लगा। यहॉ गुजराती, मारवाड़ी आदि जातियॉ उन्ही के समय आई। जिन्होने रायगढ़ को व्यापारिक दृष्टि से महत्वपूर्ण बनने में योग दिया। राजा भूपदेव सिंह प्रजावत्सल थे। प्रजा की भलाई के लिए हर संभव कार्य करते थे। मालगुजारो से उनका सीधा संबंध था। इतना ही नहीं उन्होने प्रथम महायुद्ध के समय अपनी सीमा के बाहर जाकर अंग्रेजी सरकार की मदद की थी और रायबहादुर का खिताब हासिल किया था। राजा साहब लोककलाओं, साहित्य और संगीत के भी उन्नायकों में थे। इसी पृष्ठभूमि पर राजा चक्रधर सिंह जैसे ख्यातिनाम शासक हुए। थोड़े दिनो के लिए भूपदेव सिंह के देहपतन के बाद ज्येष्ठ पुत्र नटवर सिंह गद्दी पर बैठे। लेकिन अस्वस्थता और अयोग्यता के कारण अधिकार वंचित हो, असमय ही मृत्य के काल में समा गए।

इसके बाद संगीत–नृत्य और साहित्य कला के अद्वितीय साधक चक्रधर सिंह राजगद्दी पर बैठे। वे राजा भूपदेव सिंह के द्वितीय पुत्र थे, उनका जन्म गणेश चतुर्थी संवत् 1962 को हुआ था। उनके जन्मोत्सव को गणेश मेला के राजकीय उत्सव के रूप में प्रारंभ किया गया। नन्हे महाराज की जन्म तिथि को चिरस्थाई बनाने या पुत्र प्राप्ति की खुशी में राजा भूपदेव सिंह ने मोती महल का निर्माण कराया। नन्हे महाराज की प्रारंभिक शिक्षा इसी मोतीमहल में बाद में राजकुमार कालेज रायपुर में हुई, राजा साहब टेनिस के अच्छे खिलाड़ी थे, वे अच्छे घुड़सवार भी थे। उन्होने यहॉ उर्दू, संस्कृत, अंगेंजी और हिन्दी भाषा पर विशेष योग्यता हासिल की, इसके बाद उनका मन पढाई की अपेक्षा संगीत में लगा रहता था। नटवर सिंह की अकस्मात मृत्यु के बाद कोई संतान न होने के कारण रानी ने नन्हे महाराज को गोद ले लिया और उनका तिलक कर दिया गया, और सदा के लिए राजकुमार कॉलेज छूट गया। जैसा कि पूर्व में बतलाया गया है कि रायगढ़ रियासत में कोर्ट्स ऑफ वार्डस लगा था। लेकिन राजा चक्रधर सिंह ने अपनी योग्यता प्रदर्शित कर 1927 में रूलिंग चीफ का अधिकार प्राप्त कर लिया। 1931 में उन्हे पूर्ण शासक घोषित किया गया। सांस्कृतिक क्षितिज पर रायगढ़ रियासत का नाम अब राष्ट्रीय स्तर पर होने लगा और 1937 को गर्वनर जनरल से उन्हें सनद प्राप्त हुई।

राजा चक्रधर सिंह को प्रशासन की अच्छी ट्रेनिंग मिली थी। अस्तु जब वे रूलिंग चीफ हुए तो उन्होंने विशेष दक्षता का परिचय दिया। उन्होने रियासत के विभिन्न भागों का पुनर्गठन किया एवं जनहित में

अनेक सुधार किये। राजा चक्रधर सिंह ने नये राज प्रसाद तथा अनेक भवनों का निर्माण किया, जिसमें बादल महल और टाउन हाल प्रमुख है। राजा साहब ने अपने योग्य दीवान डॉ बलदेव प्रसाद मिश्र के सहयोग से प्रशासन में जनता की सहयोगिता प्राप्त की। राजा चक्रधर सिंह का विवाह भी बड़े राजे–महाराजे के यहाँ हुआ। वे शीलवान राजा थे, उनका कद साधारण गौर वर्ण का था। वे सुदर्शन थे, धोती कुर्ता पहनते थे एवं शिकार तथा खानपान के शौकीन थे। राजा चक्रधर सिंह का ज्यादा समय संगीत और साहित्य कला के उन्नयन में जाता था। इससे दरबार का खर्च इतना बढ़ गया कि ब्रिटिश गवर्नमेन्ट ने सन् 1939 में उन पर वित्तीय प्रतिबंध लगा दिया। जनता की सहभागिता के लिए राजा चक्रधरसिंह ने सन् 1939 में प्रजा परिषद, 1945 में राज्य परिषद और 1947 में कार्यपरिषद का गठन किया था। राजा चक्रधर सिंह का कार्यकाल रियासत का स्वर्ण युग कहा जा सकता है। यदि राजा जुझार सिंह और देवनाथ सिंह ने उसे एक शक्तिशाली राज्य के रूप में विकसित किया तो राजा भूपदेव सिंह ने उसे लोककला, शास्त्रीय नृत्य, संगीत और साहित्य से समृद्ध कर अखिल भारतीय प्रसिद्धि दिलाई।

राजा चक्रधर सिंह योग्य, व्यवहारकुशल प्रजावत्सल राजा भूपदेव सिंह के सुयोग्य उत्तराधिकारी थे। उनका प्रशासन स्वच्छ, चुस्त, दुरूस्त था। जैसा कि पूर्व में कहा गया है राजा जुझार सिंह और उनके पुत्र देवनाथ सिंह ने अंग्रेजो की अधीनता स्वीकार कर अपनी छोटी सी रियासत को न केवल भोसलों से स्वतंत्र रखने में कामयाबी हासिल की बल्कि उन्होने सीमा का विस्तार कर उसे इतना शक्तिशाली बना दिया

कि ब्रिटिश हुकूमत को भी उसकी मदद लेनी पड़ती थी। अंग्रेज अफसर इन दोनो शासकों से बेहद प्रभावित थे। लेकिन घनश्याम सिंह की अयोग्यता के कारण एक बार रायगढ़ रियासत की शासन प्रणाली कमजोर हो गयी थी, जिसे उनके सुपुत्र राजा भूपदेव सिंह ने न्याय, नीति और प्रजावत्सलता के कारण सभी दृष्टि से श्री संपन्न कर दिया, उन्ही के जमाने में शिक्षा और व्यापार की बढोत्तरी हुई।

राजा चक्रधर सिंह को उत्तराधिकारी के रूप में एक श्रीसंपन्न , सभी दृष्टि से सुविधापूर्ण राज्य मिला था, जब उन्हे गद्दी नसीब हुई तब ब्रिटिश गवर्नमेन्ट संतुष्ट हुई और उन्हे पूर्ण रूप से शासक का अधिकार मिला। लोथियन के 1932 के प्रस्तावों के अनुसार 1933 में रायगढ़ सहित छत्तीसगढ़ की रियासतें, बिहार, उड़ीसा के साथ इस्टर्न स्टेट्स एजेन्सी से संबंधित कर दी गई। और सीधे केन्द्र सरकार से संबंधित हो गई। इसके तहत ई.सी. गिब्सन गवर्नर जनरल क लिए पोलिटिकल एजेन्ट नियुक्त था। राजा चक्रधर सिंह को 1937 में 5000 रूपये वार्षिक टंको के साथ नई सनद प्राप्त हुई। यहॉ न्याय व्यवस्था के अंतर्गत दीवान, 1944 तक जिला एवं सत्र न्यायाधीश का काम देखता था और राजा को प्रशासनिक सूचनाओं से अवगत कराता था। डॉ बलदेव प्रसाद मिश्र जैसे प्रसिद्ध साहित्यकार यहॉ के नायब दीवान थे । सन् 1939 से 1940 तक वे दीवान रहे, उनकी सहायता से राजा चक्रधर सिंह ने जन कल्याण के लिए प्रशासनिक सुधार किए। यहॉ दीवान के नीचे नायब दीवान, फिर परगनों के तहसीलों में तहसीलदार, नायब तहसीलदार नियुक्त थे। राजा चक्रधर सिंह ने जेलर , मिडिल स्कूल के शिक्षक, राज रीडर, आबकारी

अधिकारी तथा स्टेनोग्राफर के साथ ही अन्य विशेष अधिकारियों के वेतनमान का पुर्नर्निधारण किया । उनके लिए बोनस और भविष्यनिधि का भी प्रावधान किया। सन् 1939 में शासन परिषद का गठन किया गया, जो कि पूर्ण रूपेण प्रशासन तथा शासन तंत्र के संचालन के लिए उत्तरदायी थी। इसमें राजा साहब के अतिरिक्त दो अन्य सदस्य क्रमशः रियासत का दीवान तथा राजा का निजी सचिव सदस्य हुआ करता था। 1945 में राज्य परिषद का गठन किया गया, इस पर ब्रिटिश सरकार का नियंत्रण था इसमें वित्तीय कार्य के लिए पोलिटिकल ऐजेंट का महत्वपूर्ण हस्तक्षेप होता था। लोक सहभागिता के लिए राजा साहब ने जून 1947 में कार्यकारिणी परिषद का गठन किया था। इसमें दीवान, सहायक दीवान, ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र से राजस्व एवं सामान्य सदस्य के रूप में एक–एक जनता के प्रतिनिधि होते थे और राजा स्वयं अध्यक्ष होता था। 1939 के प्रजा परिषद में ग्रामीण क्षेत्र के 11 तथा शहरी क्षेत्र के कुल 9 अर्थात 20 सदस्य थे। इसी तरह 1946 में विधान सभा का गठन किया गया था जिसमें राजा के 16 तथा 8 निर्देशित सदस्य थे। इसका कार्यकाल 3 वर्ष रखा गया था। संपूर्ण रियासत को उस समय सात क्षेत्रो में बांटा गया था। इसमें 16 सदस्य अनुपातिक प्रणाली द्वारा निर्वाचित होते थे, इस सभा का अध्यक्ष दीवान होता था जो सभा व शासन के बीच की महत्वपूर्ण कड़ी थी, 6 महीने के बाद ही रियासत भारत संघ में विलीन होने से इसका अस्तित्व स्वयमेव समाप्त हो गया। भले ही राजा भूपदेव सिंह के समय सन् 1901 में रायगढ़ में नगरपालिका की स्थापना की गयी थी, लेकिन इसका स्वच्छ और सुंदर संगठित रूप 1931 में

चक्रधर सिह द्वारा संविधान में संशोधन के बाद ही सामने आया। इसमें जनता द्वारा निर्वाचित सदस्यों की संख्या 20 थी। नगरपालिका 1946 में समीपवर्ती गांवो को मिलाकर नगरपालिका समिति में वार्डो की संख्या 15 हो गई थी, नगरपालिका का मुख्य आर्थिक स्रोत चुंगीकर, फड़ तथा बाजार थे। यहॉ पुलिस प्रशासन भी चुस्त दुरूस्त किया गया। सबसे अधिक खर्च पुलिस पर और बची रकम से जलनिकासी, स्वच्छता और शिक्षा की व्यवस्था की जाती थी। यहॉ 1922 के जलपूर्ति गृह को अपर्याप्त मानते हुए आधुनिक जलपूर्ति गृह का निर्माण 1945–46 में किया गया। नगर में इलेक्ट्रानिक प्लांट स्थापित किया गया और 244 खंभे गाडे गये। 1945–46 में विद्युत व्यवस्था के लिए ठेकेदार नियुक्त किये गये। इसी समय नगरपालिका में एक पुस्तकालय, एक कन्याशाला की व्यवस्था की गई। चक्रधर सिह ने इसी प्रकार 1928 में खरसिया में नगरपालिका की स्थापना करवाई। यहॉ भी एक टाउन हॉल, एक प्राथमिक शाला, एक पुस्तकालय, एक रीडिंग रूम, मनोरंजन गृह और जल प्रदाय की समुचित व्यवस्था की गयी थी। ग्रामीण क्षेत्र में पूर्व में ग्राम पंचायते थीं। राजा चक्रधर सिंह ने 1939 में इनका भी पुनर्गठन किया। उन्होने रियासत के 808 गांवो में 800 ग्राम पंचायतों का गठन करवाया। सरपंच इसका सभापति होता था। इनका कार्य कृषि सुधार, सफाई और ग्रामोद्योग था। पंचायत को दीवानी प्रकरण में 50 रूपये तक जुर्माना करने तथा फौजदारी प्रकरण में 10 रूपये तक जुर्माना करने का अधिकार था।

राजा चक्रधर सिंह के प्रशासन काल में 1924 में पुलिस कर्मियों का वेतन पुर्नर्निधारित किया गया। 1925 में रिजर्व पुलिस को सशस्त्र किया गया। पुसौर में थाना की स्थापना की गयी। राजा चक्रधर सिंह के समय पुलिस बल का अनुपात क्रमशः 204 व्यक्तियों पर तथा 1092 वर्गमील पर एक सिपाही था। इनके समय जेल व्यवस्था में भी पर्याप्त सुधार किए, उन्होने कैदियों के लिए दरी बनाने, चांवल साफ करने, कुर्सियों की बुनाई एवं बागवानी आदि कार्यो की समुचित व्यवस्था की। राजा चक्रधर सिंह स्वयं उच्च शिक्षा प्राप्त थे। उन्होने इन्टर तक की शिक्षा राजकुमार कॉलेज में ली, अस्तु वे शिक्षा का महत्व समझते थे, जब राजा साहब ने शासन संभाला यहॉ कुल 28 विद्यालय थे और छात्रों की संख्या 413254 थी। शिक्षा के अतिरिक्त राजा चक्रधर सिंह वे चिकित्सा पर भी पर्याप्त ध्यान दिया। 1924 में यहॉ चार अस्पताल थे परंतु 1946 में एक बड़ा अस्पताल खोला गया जिसमें आपरेशन की व्यवस्था भी शुरू हो गयी थी। राजा साहब ने अपने समय में पशु चिकित्सालय का भी निर्माण कराया। वास्तव में राजा साहब जनता की स्वास्थ्य सेवा को सर्वोच्च स्थान देते थे। रायगढ़ रियासत को गौटिया पद्धति का गढ़ कहा जाता है। यहॉ भू–राजस्व का निर्धारण एवं प्रबंधन गौटिया ही करते थे। गौटिया भी ग्राम पंचायत का एक सदस्य होता था। वैसे विभिन्न उपकर भी राजस्व के आय के साधन थे, नवरात्रि के समय राजा को प्रत्येक गांव से एक रूपये का टीका, एक बकरा, एक सेर चांवल तथा एक सेर घी भेंट में दिया जाता था, इस अवसर पर राजा भी गौटिया को कुछ पैसे

एवं कपड़ा भेंट करता था। याने राजा एवं प्रजा में एक मधुर निकटता होती थी।

राजा चक्रधर सिंह एक प्रतिभावान साहित्यकार थे। उन्हे साहित्य की घूंटी रायगढ़ दरबार से मिली थी। राजा भूपदेव सिंह के दरबार में प्रारंभिक हिन्दी के सुकवि, सुलेखन और समालोचक पं. अन्त राम पाण्डे हेडक्लर्क थे। उनके रिश्ते के भांजे पुरूषोत्तम प्रसाद पांडेय और लोचन प्रसाद पांडेय का दरबार में सम्मान था। राजा भूपदेव सिंह की पिंगलाचार्य भानु कवि से मैत्री थी, वे अपने को आजीवन रायगढ़ दरबार का ही मानकर गर्व का अनुभव करते थे। राजा साहब ने उन्हें "साहित्याचार्य" की उपाधि से अलंकृत किया था। रायगढ़ दरबार में कलगी तुर्रा का प्रचलन था, जिसमें बड़े–बड़े शायर भाग लेते थे। इसी पृष्ठभूमि में राजा चक्रधर सिंह के हृदय में साहित्य का अंकुरण हुआ। राजा चक्रधर सिंह ने हिन्दी, उर्दू, संस्कृत भाषा के उन्नयन के लिए रायगढ़ नगर में संस्कृत विद्यालय की स्थापना कर छात्रवृत्ति की व्यवस्था की थी, राजा साहब हिन्दी, उर्दू के सेतु थे। राजा साहब के साहित्यिक सलाहकारों में उनके दीवान डॉ बलदेव प्रसाद मिश्र थे, जो द्विवेदी युग के प्रमुख कवियों में गिने जाते थे। रायगढ़ के गणेश मेला के अवसरों में उनके परामर्श से देश के कोने–कोने से यहॉ साहित्यकार आते थे। पं. मुकुटधर पांडेय राजा साहब के अंतरंग लोगों में से थे। रायगढ़ दरबार में आनंद मोहन बाजपेई जैसे सुलेख कोषालय में थे वे इनके लेखन में सहयोग करते थे।

राजा चक्रधर सिंह प्रतिभावान कवि थे। उन्होने उर्दू में "फरहत" नाम से दो काव्य संकलन प्रकाशित करवाये। जोशे फरहत तथा निगारे फरहत । इसकी प्रशंसा भगवतीचरण वर्मा ने मुक्तकंठ से की है। श्री मद्भागवत दशमस्कंधं के "रासपंचाध्यायी" के आधार पर राजा साहब ने रम्यरास की रचना की थी, यह सरस काव्य श्री कृष्ण के चरितामृत से भरा हुआ है, इसमें संस्कृत के वंशस्थ वर्णवृत का प्रयोग हुआ हैं। जो महाकवि अध्योध्यापति उपाध्याय कृत प्रियप्रवास के वर्णवृत का सहसा स्मरण करा देता है। राजा चक्रधर सिंह ने ब्रजभाषा और अवधी के ज्ञात–अज्ञात कवियों के संरक्षण के लिए काव्य–कानन नाम से संकलन प्रकाशित कराया। इसमें 1000 छंद जिसमें पद, कविता, सवैय्या, दोहे आदि निबद्ध है, काव्य कानन के प्रकाशन के पूर्व इतना बड़ा काव्य–संकलन हिन्दी में प्रकाशित नहीं हुआ है। इसी प्रकार उन्होने रत्नाहार में. संस्कृत के प्रसिद्ध श्लोकों को विनयस्त किया है। इसमें उनकी काव्य प्रतिभा के जगह–जगह दर्शन हुये हैं। जोशे फरहत, काव्य–कानन, रम्यरस और रत्नाहार की विस्तृत भूमिकाओं से राजा चक्रधर सिंह के गहन काव्य शास्त्र का ज्ञान और विश्लेषण क्षमता का आभास मिलता है। राजा चक्रधर सिंह न केवल कवि थे वरन् वे एक सुयोग्य लेखक भी थे। उन्होने तीन भाग में अलका पुरी , मायाचक्र तथा बैरागढ़िया राजकुमार जैसे लोकप्रिय उपन्यासों की रचना की है। बैरागढ़िया राजकुमार तो हिन्दी उपन्यास में कंठाहार जैसे था। मायाचक्र और अलकापुरी में तिलिस्म और अय्यारी का सुंदर संगम हुआ है। इसमें रायगढ़ रियासत के जंगल, पहाड़, गुफा, टोटका, जादू और तंत्र–मंत्र का

सुंदर समावेश मिलता है। जो देवकीनंदन खत्री की चंद्रकांता संतति जैसा ही रोचक है । इसी प्रकार प्रेम के तीर उनका एक महान नाटक है, जिसमें प्रेम की बिहवलता, त्याग, बलिदान आदि का सुंदर निरूपण हुआ है, लेकिन यह नाटक कई जगह प्रेम का अश्लील चित्रण भी खड़ा कर देता है, और चक्रधर सिंह को साहित्य की उच्चतम भूमि पर नहीं ले जा पाता। राजा चक्रधर सिंह एक साथ कवि, नाटककार, उपन्यासकार और सुलेखक– समालोचक थे, लेकिन इससे भी बढ़कर वे साहित्य के संरक्षक थे। वे साहित्यकारों के बड़े कदरदान थे। उनके दीवान डॉ. बलदेव प्रसाद एवं द्विवेदी उनके अलकापुरी उपन्यास के प्रशंसक थे। राजा साहब ने युवा प्रतिभा की खोज के लिए "चक्रधर पुरस्कार" की योजना बनाई थी, जिसमें भगवती चरण वर्मा, पं. माखनलाल चतुर्वेदी, रामकुमार वर्मा, रामेश्वर शुक्ल जैसे युवा कवियों को चक्रधर सम्मान से अलंकृत कर प्रोत्साहित किया गया था। राजा साहब ने "रायगढ़ समाचार" में नये कवियों जैसे ज्वाला प्रसाद मिश्र, वाच्छानिधि, पं. किशोरी मोहन त्रिपाठी जैसे कवियों को प्रकाशित कराया था। राजा चक्रधर सिंह की कवितायें भी रायगढ़ समाचार में छपती थी। राजा चक्रधर सिंह ने विभिन्न राग–रागिनियों में शताधिक गीतचक्रप्रिया के नाम से लिखे है, जो काफी प्रसिद्ध हुए थे। राजा चक्रधर सिंह बड़े साहित्यकारों को यथेष्ठ सम्मान करते थे। जब वे शिकार में जाते तो रात्रि में साहित्यिक गोष्ठियां होती थी, जिसमें पं. बलदेव प्रसाद मिश्र जैसे नामी कवि भाग लेते थे। गणेश मेला के अवसर पर यहां शेरो शायरी के अतिरिक्त विशाल कवि सम्मेलन का आयोजन होता था। वास्तव में राजा

चक्रधर सिंह साहित्य के एक निष्ठ उपासक तथा महान संरक्षकों में एक थे।

बीसवीं सदी के देशी राजाओं में नृत्य–संगीत के विकास में रायगढ़ नरेश राजा चक्रधर सिंह का सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान है, वे राजगोंड थे जो इतिहास में कलाप्रियता के लिए ख्यात है। राजा चक्रधर सिंह के दादा घनश्याम सिंह स्वयं अच्छे पखावज थे, वे रात दिन संगीत में डूबे रहने के कारण अयोग्य शासक सिद्ध हुए थे, उन्होनें अपने कनिष्ठ पुत्र पीललाल को मृदंग और पखावज की शिक्षा के लिए बनारस भेजा था, उनके मझले लड़के नारायणसिंह भी अच्छे संगीतज्ञ थे। राजा भूपदेव सिंह स्वयं कला पारखी थे। उन्होनें लोक और शास्त्रीय नृत्य–संगीत के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। सन् 1912 में उनके दरबार में नेपाल दरबार के नर्तक पं. गिरधारी लाल का अभूत पूर्व सम्मान हुआ था, जो कि बताशों के ऊपर सुगमता से नाचने के लिए प्रसिद्ध थे। रायगढ़ के ऐतिहासिक गणेश मेला में दूर–दूर से स्थानीय कलाकारों की पार्टियां आती थी और देश के कोने–कोने से शास्त्रीय संगीतज्ञ, नर्तक भाग लेते थे। उन्होने अपने समय में दरबार में चुन्नीलाल, मोहनलाल, सीताराम, चिरंजीव लाल, झण्डे खां और शिवनारायण जैसे कथकों को बुला लिया था। जब राजा चक्रधर सिंह 1924 में गद्दी में बैठे तो उनका अधिकांश समय राजपाठ की ओर न होकर नृत्य–संगीत में व्यतीत होता था। इस दिशा में उनके चाचा लाल नारायण सिंह उन्हें प्रोत्साहित करते रहते थे।

राजा चक्रधर सिंह के गद्दी पर बैठते ही यहां गणेशोत्सव में चार चांद लग गए।

राजा चक्रधर सिंह स्वयं अनूठे संगीतज्ञ थे। वे ताण्डव नृत्य और तबला वादन में अद्वितीय थे। उन्होने कादर बक्श, कराम तुल्ला, थिरकवा, अहमद जान जैसे लोगों से तबले के गुर कठिन मेहनत से सीखे थे। ठाकुर दास, रामदास और पर्वतदास से उन्होने मृदंग और पखावज की कठिन तालों का ज्ञान प्राप्त किया था। इनायत खॉ उनके सितार वादन के गुरू थे। रायगढ़ दरबार में आए दिन नर्तक, गायन और वादकों का जमावड़ा लगा रहता था। वे संगीत के चारो अंग के निष्णात कलाकार थे। राजा चक्रधर सिंह के दरबार में सर्वाधिक उन्नति कथक नृत्य की हुई। वे नृत्य संगीत के विलक्षण कलाकार तो थे ही उन्होने अपने दरबार में देश के उच्च कोटि के नर्तक–वादकों , कार्तिक राम, कल्याण, बर्मन और फिरतु महाराज को बाल कलाकारों की शिक्षा के लिए नियुक्त किया था। जिसमें जयपुर के जयलाल महाराज और लखनऊ घराने के अच्छन, लच्छू और शंभू महाराज प्रसिद्ध थे। सन् 1931–32 में देश में कार्तिक–कल्याण जैसे नर्तकों की समता करने वाला दूसरा कलाकार नहीं था। राजा चक्रधर सिह के अवदानों को देखते हुए उन्हे 1938 में अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन का अध्यक्ष बनाया गया था, इसी प्रकार 1939 में दिल्ली में वायसराय ने उन्हे संगीत–सम्राट की उपाधि से नवाजा था। राजा चक्रधर सिंह की अनोखी सूझ–बूझ, अथक परिश्रम और प्रतिभा ने कथक नृत्य में एक अभिनव शैली को जन्म दिया था जिसे रायगढ़ कथक के नाम से जाना जाता है। राजा साहब स्वयं संगीत नृत्य के श्रेष्ठ गुरूओं में से थे। कार्तिक–कल्याण, फिरतु महाराज, बरमन उनके प्रमुख नर्तक शिष्य है। इसी प्रकार ठाकुर प्रसाद देवांगन

संपत लाल, लाल फूलचंद और बड़कु मियॉ उनके गायक वादक शिष्यों में प्रमुख है। राजा साहब न केवल गुरू और श्रेष्ठ कलाकार थे अपितु वे संगीत नृत्य के सुलेखक भी थे। उन्होने नर्तन सर्वस्व, तालतोयनिधि, मुरज–पर्णपुष्पाकर , रागरत्न, मंजूषा और तालबल पुष्पाकर नामक ग्रंथो की रचना की है। इसमें प्रथम दो आज भी मंझले राजकुमार सुरेन्द्र कुमार सिंह के पास मोती महल में सुरक्षित हैं। राजा चक्रधर सिंह ने इन ग्रंथो को संस्कृत भाषा में लिखा है उनकी सहायता के लिए दरबार में 21 संस्कृत आचार्यो का जमावड़ा था जिसमें पं. सदाशिव दास शर्मा प्रमुख थे। नर्तन सर्वस्व का मूल आधार नर्तन रहस्यमय है, जो कि विशाखादत्त द्वारा प्रणित था। इसे युद्ध के दौरान संस्थापक राजा मदन सिंह ने प्राप्त किया । नर्तक सर्वस्व एक प्रकार का कथक नृत्य का व्याकरण ही है, इसमें बारह खडी की भांति बोलो में प्रयुक्त होने वाले अक्षरों की अनुक्रमणिका है। इसके बाद इसमें बोल, परण एवं नृत्य के समय अंग, उपांग और सभी रसों का विशद वर्णन है, ग्रंथ के अंत में दर्जनों नृत्य नाटिकाएँ जिनका आधार श्रीमद्भागवत, रामायण तथा अभिज्ञान शाकुंतलम् है। इन ग्रंथो को लिखने में संगीत मर्मज्ञ भूषण महाराज, सदाशिव दास शर्मा, भगवान दास पांडे का प्रमुख हाथ है। इसके छंदो की रचना शायद छायावादी कवि जानकी वल्लभ शास्त्री ने की थी, उन्हे ग्रंथ लिखने में सहायता के लिए ही दरबार में नियुक्त किया गया था। नर्तक सर्वस्व को 1938 में जब अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन इलाहाबाद में प्रथम बार प्रदर्शित किय गया तो इसकी बड़ी प्रशंसा हुई। यह नृत्य के इतिहास में अद्वितीय ग्रंथ है और इसे अंतर्राष्ट्रीय ख्याति

मिली हुई है। राजा चक्रधर सिह प्रणीत दूसरा महान अद्वितीय ग्रंथ तालतोयनिधि है। इसका वजन 32 किलो है, इसमें चक्र सहित 364 मात्राओं तक के बोलों का विशद वर्णन है इसमें एक–एक ताल की कई उपजातियॉ सैकड़ों आचार्यो के बोलों को आधार बनाया गया है। विशेष शैली के कारण आज रायगढ़ का कथक घराना समूचे संगीत नृत्य जगत में धूम मचाने लगा हैं। विद्वानो का कहना है कि आज हिंदुस्तान में जो कथक नाचा जा रहा है, वह रायगढ़ दरबार की शैली में नाचा जा रहा है। संक्षेप में कार्तिक कल्याण , फिरतु और बर्मन जैसे श्रेष्ठ कलाकारों ने जो नृत्य जगत में ऊंचे आयाम दिए हैं वे रायगढ़ दरबार की ही महान उपलब्धियां हैं। दूसरी महान उपलब्धि नर्तक सर्वस्व और तालतोय निधि जैसे अद्वितीय ग्रंथो का प्रणयन और तीसरी उपलब्धि राजा साहब द्वारा प्रचलित बोल परणों की शताधिक प्रस्तुतियां जिससे रायगढ़ कथक घरानो को मजबूत आधार मिला।

नौ दिवसीय चक्रधर समारोह वर्तमान में छत्तीसगढ़ राज्य का प्रमुख उत्सव है। इसका उद्घाटन और समापन, महामहिम राज्यपाल तथा मुख्यमंत्री के कर कमलों से होता है। इसी से इसकी महत्ता साबित होती है, जनसहयोग, जिला प्रशासन और संसकृति विभाग की सहभागिता से चलने वाले इस समारोह में देश के कोने कोने से कलाकार से लेकर नामी–गरामी कलाकारों की सहभागिता होती है। देश में प्रचलित सभी प्रकार के नृत्य यथा– कथक, ओडिसी, कुचिपुड़ी, मड़ीपुरी, भरतनाट्यम जैसे शास्त्रीय नृत्य से लेकर छत्तीसगढ़ी नाचा तक का इसमें समावेश होता है। इसी प्रकार उत्तर भारतीय और दक्षिण

भारतीय शैली के वादन और गायन का समावेश भी भारतीय एकता की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।

रायगढ़ के गणेश मेला का भी ऐतिहासिक महत्व है। यह रियासत काल में आज से भी ज्यादा विख्यात था, इसकी शुरूआत नन्हे महाराज अर्थात् राजा चक्रधर सिंह के जन्मोत्सव के रूप में सन् 1901 से की गई और अखंडित रूप से यह संन् 1948 तक चलता रहा, तब यह रियासत का प्रमुख राजकीय उत्सव था। और इसे गणेश मेला के नाम से जाना जाता था। यह उत्सव एक महिना तक चलता था इसमें स्थानीय कलाकारों को भी शामिल किय जाता था। शताधिक, करमा, शुआ, डंडा नृत्य के दल यहां आते थे, तीतर, बटेर, मुर्गे की लडाई, दंगल, कुश्ती जुआ, पतुरियां का नाच यहां के प्रमुख आकर्षण थे।

1924 में जब चक्रधर सिंह का राज्याभिषेक हुआ तब इसके स्वरूप में काफी परिवर्तन हुआ, रायगढ़ का राजा भोज की धारा नगरी में परिवर्तित हो गया। यहां के गणेश मेले की तब राष्ट्रीय स्तर की पत्र–पत्रिकाओं में चर्चा होने लगी, जिसमें कर्मवीर प्रमख था। राजा चक्रधर सिह के युग में रायगढ़ के गणेश मेंला में देश के प्रमुख संगीतज्ञ, नर्तक और कविगण तो भाग लेते थे, यहां नाचने वाली पतुरियां तवायफों और किन्नरों की भीड़ लग जाती थी। ये लखनऊ, बनारस इलाहाबाद, कटनी आदि से आते थे। राजा चक्रधर सिंह के देहपतन के बाद ही राजा ललित कुमार सिंह ने इस गरिमापूर्ण आयोजन को जारी रखा, लेकिन प्रिवीपर्स के बाद इस राजकीय उत्सव ने दम तोड़ दिया। कुछ उत्साही नागरिकों के सहयोग से कुमार भानुप्रताप सिंह ने इस उत्सव

को 1954 तक खींचा जो कव्वाली और मुशायरा और कवि सम्मेलनों पर सिमट कर रह गया। वर्तमान चक्रधर समारोह का गरिमापूर्ण आयोजन श्री चक्रधर ललित कला केन्द्र ने 1985 में प्रारंभ किया। इसके आयोजन में पं. मुकुटधर पांडेय , पं. किशोरीमोहन त्रिपाठी, जगदीश मेहर, डॉ बलदेव, रजनीकांत मेहता, वेदमणि ठाकुर और मनहरण सिंह ठाकुर प्रमुख थे। पांडेय जी के कारण इस आयोजन में छत्तीसगढ़ के प्रमुख साहित्यकार जैसे हरि ठाकुर, केयूरभूषण, श्यामलाल चतुर्वेदी जैसे नामी गिरामी लोग तो जुडे ही, इसमें मुख्यमंत्री के रूप में मोतीलाल जी बोरा और दिग्विजय सिंह भी लंबे समय तक जुड़े रहे, शुरू के वर्षो में बोरा जी ने इसे 10000 रूपये का अनुदान दिया । बाद में म.प्र. शासन की ओर से दो दिवसीय चक्रधर समारोह आयोजित होने लगा, शेष सात दिन छत्तीसगढ़ के स्थानीय कलाकार इंदिरा संगीत विश्वविद्यालय खैरागढ़, वैष्णव संगीत महाविद्यालय रायगढ़, बिलासपुर लक्ष्मण संगीत विद्यालय रायगढ और अन्य लोककला संस्थाएं भाग लेने लगी और धीरे–धीरे इसमे केरल, बिहार, बंगाल, मणिपुर, महाराष्ट्र आदि सरकारों द्वारा प्रायोजित कार्यक्रम को शामिल किया गया। इसकी चर्चा हिंदूस्तान के प्रमुख दैनिको से लेकर दिनमान जैसी अंतर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं में भी हुई है। इस बीच महान दुर्गा लाल (कथक), बुधादित्य मुखर्जी (सितार), काजल मिश्र (कथक), कपाली वालिया (कथक), अनिता सेन (गायन), सोनल मानसिंह (भरतनाट्यम), मोहनी पूंछवाले (कथक), ओमप्रकाश चौरसिया (संतूर), रायगढ़ दरबार के कार्तिक राम, कल्याण, फिरतुराम, बर्मन जैसे महान कलाकारों ने सिरकत की थी।

छत्तीसगढ़ राज्य जब अस्तित्व में आया तो श्री चक्रधर ललित केन्द्र रायगढ़ ने इस ऐतिहासिक गणेशोत्सव को शासन को सौंप दिया। वर्तमान में यह छत्तीसगढ़ का प्रमुख और नौ दिनों तक चलने वाला राजकीय उत्सव है। इस कार्यक्रम में भारत रत्न बिसमिल्ला खां, पद्मभूषण तीजनबाई, परवीन सुलताना, देवदास बंजारे, पद्मभूषण बिरजूमहाराज, पद्मभूषण हरिप्रसाद चौरसिया जैसे महाना कलाकारों का आगमन हो चुका है। इन महान कलाकारो ने मुक्त कंठ से रायगढ़ के इस महोत्सव को राष्ट्रीय एकता बतलाया है।

इस प्रकार एक शब्द में कहें तो राजा चक्रधर सिह की दीर्घसंगीत साधना रूपी तरू का "चक्रधर समारोह" मीठा, सुस्वाद एवं स्वास्थ्य वर्धक सुगंधित फल है। इस आयोजन से राजा चक्रधर सिंह की स्मृति सदैव ताजा रहेगी।